

 सत्यमेव जयते	<b>राजस्थान राजपत्र</b> <b>विशेषांक</b>	<b>RAJASTHAN GAZETTE</b> <b>Extraordinary</b>
	<b>साधिकार प्रकाशित</b>	<b>Published by Authority</b>
	भाद्र 17, गुरुवार, शाके 1944-सितम्बर 08, 2022 <i>Bhadra 17, Thursday, Saka 1944- September 08, 2022</i>	

**भाग-1(ख)**

**महत्वपूर्ण सरकारी आज्ञायें।**

फार्म-एम

**वन विभाग**

**विज्ञप्ति**

**जयपुर, अगस्त 01, 2022**

**संख्या प. 2 (15) वन/2022 :-**चूंकि संलग्न अनुसूची में वर्णित वनभूमि एवं बंजर भूमि सरकार की सम्पत्तियाँ हैं या उनमें सरकार के स्वामित्व अधिकार हैं या उनकी सम्पूर्ण या आंशिक वन उपज पर सरकार का अधिकार है,

और चूंकि ऊपर कथित वनभूमि या बंजर भूमि को सरकार, राजस्थान वन अधिनियम, 1953 की धारा 29 की उप धारा (1) के अन्तर्गत संरक्षित वन के रूप में घोषित करने का विचार रखती है,

और चूंकि, पूर्वोक्त भूमि पर सरकार और निजी व्यक्तियों के अधिकारों की सीमा एवं स्वरूप अभी तक किसी प्रकार से लेखबद्ध नहीं किये गये हैं,

और चूंकि, सरकार यह भी विचार रखती है कि पूर्वोक्त वनभूमि या बंजर भूमि में या पर सरकार एवं निजी व्यक्तियों के अधिकारों की सीमा एवं स्वरूप के संबंध में जांच किया जाना एवं उन्हें लेखबद्ध किया जाना आवश्यक है, परन्तु चूंकि इन कार्यों के सम्पादन में जितना समय लगेगा कि इस प्रक्रिया के समाप्त होने तक सरकार के अधिकारों को क्षति पहुंचने की आशंका रहेगी।

अब इसलिए, राजस्थान वन अधिनियम, 1953 (1953 का अधिनियम सं. 13) की धारा 29 की उप धारा (3) द्वारा प्रदत्त शक्तियों के प्रयोग में सरकार वन बन्दोबस्त अधिकारी को पूर्वोक्त वनभूमि या बंजर भूमि में या सरकार एवं निजी व्यक्तियों के अधिकारों की जांच करके उन्हें लेखबद्ध करने हेतु नियुक्त करती है और ऐसी जांच, साक्ष्य एवं अभिलेख उस प्रणाली में किया जायेगा जैसा कि इस अधिनियम की धारा 6, 7, 8, 10, 11(2), 12, 13, 14, 17, 18 एवं 19 में प्रावहित है।

और, इस अधिनियम की धारा 29 की उप धारा (3) के परन्तुक द्वारा प्रदत्त शक्तियों के अनुसरण में, राजस्थान सरकार ऊपर कथित जांच एवं अभिलेख के विचारार्थ रहते, कथित वनभूमि एवं बंजर

भूमि को इस विज्ञप्ति के द्वारा संरक्षित (protected) वन के रूप में घोषित करती है, परन्तु इससे व्यक्तियों या वर्ग विशेष के वर्तमान अधिकारों में किसी भी प्रकार की कमी नहीं होगी और न ही उन पर कोई विपरीत प्रभाव पड़ेगा।

और इस अधिनियम की धारा 30 द्वारा प्रदत्त शक्तियों के अग्रेत्तर अनुसरण में सरकार यह भी घोषणा करती है कि उक्त संरक्षित वन के वृक्ष जो इसके संलग्न द्वितीय अनुसूची में अंकित किये गये हैं, इस अधिसूचना के राजपत्र में प्रकाशित होने की तिथि से आरक्षित हो जावेंगे और पूर्वोक्त तारीख से कथित वन में पत्थर खोदना या चूना या लकड़ी का कोयला जलाया जाना अथवा किसी भी प्रकार की वन उपज का संग्रहण किया जाना या निष्कासन करना या हटाया जाना और उक्त वन में किसी भूमि की खुदाई या कृषि हेतु या भवन निर्माण हेतु या मवेशी चराने या अन्य प्रयोजनार्थ वन की सफाई करना या वनभूमि को खण्डित किया जाना निषिद्ध करती है।

I. अनुसूची (वन भूमि एवं बंजर भूमि)

II. अनुसूची (आरक्षित वन)

राज्यपाल की आज्ञा से,

वेंकटेश शर्मा,

शासन सचिव,

वन विभाग,

शासन सचिवालय, जयपुर।

क्र. सं.	नाम ब्लॉक	नाम तहसील	नाम जिला	दिशा	दिशावार सीमा विवरण	राजस्व ग्राम	विवरण		
							खसरा नं.	क्षेत्रफल (हैक्टर)	भूमि किस्म
1.	फलौदी सप्तम	फलौदी	जोधपुर	उत्तर	राजस्व ग्राम फलौदी का खसरा नं. 188/1 एवं 188/12 की भूमि	फलौदी	596/13	32.3748	गै.मु. जंगल
				दक्षिण	रेल मार्ग जोधपुर से जैसलमेर एवं खसरा नं. 598,596/14 एवं 597 की भूमि				
				पश्चिम	राजस्व ग्राम फलौदी का खसरा नं. 596/1 की भूमि				
				पूर्व	बीकानेर से जोधपुर रेल मार्ग खसरा नं. 596/10 आया हुआ है।			32.3748	हैक्टर

बुधाराम विश्नोई,  
क्षेत्रीय वन अधिकारी  
फलौदी।

रमेश कुमार मालपानी,  
उप वन संरक्षक  
जोधपुर।

वनखण्ड फलोदी सप्तम

द्वितीय अनुसूची

प्रस्तावित वनखण्ड में आने वाली वनस्पतियों के वानस्पतिक नामों की सूची

क्र. सं.	बोटनिकल नाम	हिन्दी नाम
1.	Acacia senegal	कुमठा
2.	Prosopis cineraria	खेजड़ी
3.	Azadirachta indica	नीम
4.	Prosopis juliflora	विलायती बबूल
5.	Acacia tortilis	अकेसिया टोटलिस

बुधाराम विश्‍नोई,  
क्षेत्रीय वन अधिकारी  
फलोदी।

रमेश कुमार मालपानी,  
उप वन संरक्षक  
जोधपुर।

**प्रमाण - पत्र**

वनखण्ड - फलोदी सप्तम

रेन्ज - फलोदी

वनमण्डल - जोधपुर

- 1 प्रारूप में दर्शाई गई भूमि की प्रकृति राजस्व जमाबन्दी में गैर मुमकीन वन विभाग के रूप में दर्ज है। इस भूमि पर वनविभाग द्वारा वृक्षारोपण करवाया गया है तथा यह क्षेत्र वर्तमान में वन विभाग के नाम अमल दरामद है।
- 2 विज्ञप्ति प्रपत्र में उल्लेखित भूमि वन विभाग के अधीन है। प्रस्तावित भूमि में कोई अतिक्रमण, खनन कार्य नहीं किये हुए है।
- 3 प्रस्तावित वन क्षेत्रों में समस्त क्षेत्र पूर्व से ही विभाग के अधीन है, जिन पर क्लोजर, प्लांटेशन एवं विकास कार्य किये गये हैं एवं भविष्य में किये जाने की सम्भावना है।
- 4 प्रस्तावित भूमि पर वृक्षों का घनत्व 0.10 से 0.30 तक का है एवं इन क्षेत्रों में मुख्य जूलीफ्लोरा, कुमठ, टोटलिस, नीम खेजड़ी एवं अन्य मिश्रित प्रजातियों के पेड़ एवं झाड़ियाँ हैं।
- 5 प्रस्तावित क्षेत्र की समस्त भूमि वनविभाग के अधीन है तथा समीपवर्ती खातेदारी भूमियाँ वन सीमाओं से पृथक् हैं एवं इससे प्रस्तावित वन क्षेत्रों के संरक्षण में कोई अवरोध नहीं होगा। विभागाधीन भूमियों का विकास कार्यों में उपयोग हो रहा है।
- 6 प्रस्तावित भूमियों का मानचित्र संलग्न है।
- 7 पूर्व में खसरावार भूमि का मौके पर सुविज्ञ रूप से सीमाज्ञान नहीं होने कारण अधिसूचना हेतु प्रस्ताव प्रस्तुत नहीं किये जा सके थे किन्तु अब सीमाज्ञान के पश्चात नये प्रस्ताव प्रारूप बनाये जाकर प्रेषित किये जा रहे हैं।
- 8 इस वनभूमि का पूर्व में राजपत्र में प्रकाशन नहीं हुआ है।

बुधाराम विश्णोई,  
क्षेत्रीय वन अधिकारी  
फलोदी।

रमेश कुमार मालपानी,  
उप वन संरक्षक  
जोधपुर।

---

राज्य केन्द्रीय मुद्रणालय, जयपुर।